मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

## (Hindi Literature)

टेस्ट–14

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2314**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time Allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक : 250<br>*Maximum Marks : 250* |
|---|---|

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01/09/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

| 0 | 8 | 1 | 1 | 4 | 9 | 2 |
|---|---|---|---|---|---|---|

### Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 139 टिप्पणी (Remarks): —

| मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)<br>*Evaluator (Code & Signatures)* | पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)<br>*Reviewer (Code & Signatures)* |
|---|---|
| E-514 | f-11 |

दृष्टि The Vision

# Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

---

वाक्य- गठन पर ध्यान दें।
अशुद्धियों पर ध्यान दें।
अधिकतर उत्तर अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ ठीक है।
लेखन-शैली अच्छी है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण ठीक है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation


दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) चोट सताँणीं बिरह की, सब तन जरजर होइ।
मारणहारा जाँणि है, कै जिहिं लागी सोइ।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ संत काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास की हैं जिसका संकलन श्यामसुंदर दास ने कबीर ग्रन्थावली में किया है। यह "विरह कौ अंग" से लिया गया है।

प्रसंग - राम के विरह की अद्भुत व्यजंना हुई है। कबीर ब्रह्म रूप ईश्वर के विरह में डूबे हैं।

व्याख्या - विरह के समान ही उसे चोट महसूस हो रही है। यह पूरा शरीर जरजर हो गया है। जिस प्रकार किसी किसी मरे हुये को जगाते हैं उसी प्रकार मेरी स्थिति एक समान हो गई है। हे प्रभु



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अब तो कृपा कीजिये

काव्यगत सौंदर्य

भाषा- सधुक्कड़ी पंचमेल खिचड़ी
काव्यरूप- मुक्तक
संगीतात्मकता, गेयता
अलंकार - (रूपक)

विशेष

•) ब्रह्म रूपी ईश्वर का विरह दिखाया गया है। यही अतिशयोक्ति विरह नागमती के विरह में दिखता है "यह तन जारौं छार कै"

•) खड़ी बोली की अधिक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं (न → ण का प्रयोग)

•) ब्रह्म निर्गुण है कबीर निर्गुण ब्रह्म की आराधना करते हैं
"निर्गुन राम जपहुं रे भाई"

कबीर भक्ति मार्ग को सरल न मानकर कठिन मानते हैं।

अच्छा

6/10



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्णकाव्यधारा के शिखर कवि सूरदास जी की हैं जिसका संकलन रामचन्द्र शुक्ल के भ्रमरगीतसार में हुआ।

प्रसंग - उद्धव के गोकुल आने पर गोपियाँ उद्धव एवं मथुरा पर व्यंग्य कर रही हैं

व्याख्या - गोपियाँ कह रही हैं कि उद्धव काला किया तुम आये, वरना वह मथुरा तो ऐसी नगरी है जहाँ जो भी जाता है भूल जाता है। जैसे कृष्ण मथुरा जाके भूल गये हैं तथा हमारी अँखियाँ उन्हें आज भी निहार रही हैं हम यमुना किनारे बैठ कृष्ण की लीलाओं को

[illegible]



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

याद करते हैं तथा कौ कृष्ण स्मृतियों में खो जाते हैं

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - ब्रजभाषा
अलंकार → रूपक, अनुप्रास
काव्यरूप → मुक्तक
गेयता, संगीतात्मकता विद्यमान

विशेष

- विरह का सुन्दर उपालम्भ किया है। उद्धव जी कहते हैं श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालम्भ कोई दूसरा नहीं है
- गोपियों को विरहदग्ध दिखाया है यही स्थिति गुप्त की उर्मिला, तुलसी की सीता में है
- मथुरा पर व्यंग्य करते हुए उसे काजर के समान बताया है जैसे कबीर ने भी कहा है "यह संसार कागद की पुड़िया"

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकालीन श्रृंगारिक कवि "बिहारी" जी की एकमात्र रचना बिहारी सतसई से ली गयी है।

प्रसंग - सामंतवादी श्रृंगारिकता की झलक के साथ नायक नायिका मिलन का सुन्दर वर्णन किया है बिहारी की श्रृंगारिकता रीतिकालीन परिवेश का परिचायक है।

व्याख्या - नायिका का श्रृंगारिक वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि नायिका की चमक, तमक, हँसी, महक, ऐसी है कि उससे देख नायक लट्टू हो गया है जैसे रात्रि के समय सभी मंत्र मुग्ध हो जब सोते हैं वैसे ही सब उसे देखकर मुग्ध हो रहे है लेकिन जिसने उसे नहीं देखा मानो जीवन में बहुत बड़ी हानि कर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रह ली है

**काव्यगत सौंदर्य**

भाषा - ब्रजभाषा
अलंकार - रूपक
काव्यरूप - मुक्तक
रस - श्रृंगार

**विशेष**

- सामंती मानसिकता का उद्घाटन किया है
- बिहारी ~~ने~~ उक्त पंक्तियों में गागर में सागर पंक्ति चरितार्थ हुई है
- (*) बिम्बात्मकता का सुन्दर वर्णन - ग्रियर्सन ने भी कहा है - "बिहारी जैसे कवि पूरे यूरोप में नहीं है"
- (*) छोटे बातों में बड़ी बात कह कर समास क्षमता का सुन्दर प्रयोग किया है

पंक्तियों में रीतिकालीन श्रृंगार के अनुरूप दैहिक सौंदर्य का चित्रण हुआ है

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation


दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
औनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

**संदर्भ** - प्रस्तुत पंक्तियाँ मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत के "नागमती वियोग" खण्ड से ली गई हैं।

**प्रसंग** - रतन सिंह के पद्मावत को पाने जाने के ~~बाद~~ लिए चले गया है वही नागमती वियोग में पड़ी रतन सिंह को याद करती है।

**व्याख्या** - आसाढ़ का महीना आ गया है तो विरह सेना उठ गई और बढ़ गया है बादल तेज गड़गड़ाहट के साथ बज रहे हैं। बादल के घने अंधेरा कर दिया है अब मेरी रक्षा कौन करेगा है प्रिय ऐसा कहती है कोकिला (कोयल) अपनी मधुर आवाज से मेरे विरह को और बढ़ा रही है साथ ही नक्षत्र भी आ गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अब मेरे इस मन्दिर रूपी हृदय पर कौन छापा करेगा। हे प्रिय आप लौट आइये तथा मुझे इन सब समस्याओं से बाहर निकालदीये।

कड़वक बद्ध शैली है।

काव्यगतसौन्दर्य - भाषा → अवधी
काव्यरूप → प्रबंधकाव्य
अलंकार - अतिशयोक्ति
रस - वियोग

विशेष

- मध्यकालीन नारी की हालत की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।
- नागमती का रानीपन ~~~~ नहीं नारीपन उभरा है और जायसी के साधारीकरण की सुन्दर अभिव्यक्ति है। → साधारणीकरण
- विरह का ऊहात्मक वर्णन जो फारसी परम्परा से प्रेरित लगता है।
- बारहमासा वर्णन का सुन्दर प्रयोग
- शुक्ल ने भी कहा है- नागमती का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय विशेषता है।

बहुत अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त में निज शक्ति का,
जिससे रूका वह स्त्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनीतता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर-बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की भावप्रधान महाकाव्यात्मक रचना कामायनी से ली गई हैं।

प्रसंग - कामायनी के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत है श्रद्धा की को विचलित होते दिखाया गया है।

व्याख्या - इसके दो अर्थ परिलक्षित होते हैं एक समालोचक है जो कामायनी की नायिका "श्रद्धा" के विचलित मन को दर्शा रहा है। दूसरा मानव मन की धारा के समान मानव के मन में श्रद्धा होती श्रद्धा को दिखाया गया है कि कैसे मानव मन श्रद्धा जागती है फिर अनुदारता आती है। बुद्धि भी स्त्री से उत्पन्न होती है जिससे वह श्रद्धा के विपरीत कभी-कभी कुमति (गलत कार्य) हेतु प्रेरित

भारत-भारती
मैथिलीशरण गुप्त

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करती है

**काव्यगत सौंदर्य** भाषा - खड़ी बोली
काव्यरूप - भावप्रधान महाकाव्य
गेयता, संगीतात्मकता विद्यमान
अलंकार - रूपक

**विशेष**

- मानव मन में उपजी सृष्टि के समान वर्णन किया गया है एवं जयशंकर प्रसाद ने कहा "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि रूपक का अद्भुत समन्वय हो गया है"
- खड़ीबोली का सरल एवं प्रवाहमयी प्रयोग हुआ है
- ग्रियर्सन ने इसे अन्योक्ति रचना माना है ~~[illegible]~~

अपूर्ण
0/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'फूल मरै पै मरै न बासू'- इस कथन के संदर्भ में पद्मावत की काव्य-वस्तु का विवेचन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कविता को रीतिवादी मनोरंजन से मुक्त कर सामाजिक दायित्व से युक्त करना चाहते थे। क्या मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृति 'भारत-भारती' द्विवेदीजी की इस मंशा को पूरी करती है? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी जयशंकर प्रसाद का भावप्रधान महाकाव्य है जो छायावाद में विकसित हुई विधा है तथा कामायनी में जयशंकर प्रसाद का मूल दर्शन अर्थात प्रत्यभिज्ञा दर्शन परिलक्षित हुआ तथा पश्चिम के कुछ अन्य विचारों का भी प्रभाव कामायनी पर परिलक्षित होता है।

जयशंकर प्रसाद के समय में पाश्चिमी चिंतकों का प्रभाव भारतीय बौद्धिक जगत पर पड़ रहा है तथा प्रसाद के काव्य में भी वही प्रभाव परिलक्षित होता है।

पश्चिम में डार्विन के विकासवाद की थ्योरी बहुत प्रचलित हो रही थी जिसमें विकास की प्रक्रिया में उन जीवों का अस्तित्व रह जायेगा जो ज्यादा प्रतिस्पर्धी होंगे दिखाया गया है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यही भाव कामायनी में भी दिखता है।

"स्पर्धा में जो उत्तम ठहरे वो रह जावें"

गांधी द्वारा समर्पित नव्य वेदान्त का प्रभाव भी भारतीय जगत पर था वही कामायनी में दिखता है तथा वह पहचान कामायनी अपने से आगे के समय का काव्य बन जाते हैं।

"वे पवड़ जो बचे पड़े इस मचल जगती के
क्या उनके कुछ अधिकार नहीं हैं यह सब ही हैं
कीड़े"

पाश्चात्य में प्रचलित मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव में कामायनी में दिखता है

"बीरों की जो आई बन बैली
कभी नहीं जो मिलने को"

साथ ही छायावाद की मूल प्रवृत्ति अर्थात प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन में मुख्य है -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"यह प्रकृति परम रमणीय
अखिल ऐश्वर्य शोभा हीन"

किन्तु प्रसाद का मूल दर्शन शैवाद्वैतवाद से प्रभावित प्रत्यभिज्ञा दर्शन है जिसके व्याख्याता अभिनवगुप्त थे। इसमें इच्छा, क्रिया व ज्ञान के बीच संतुलन को ही जीवन की समस्या का मूल केन्द्र माना है।

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके यह विडम्बना है जीवन की"

साथ ही यदि किसी ने इस इच्छा, क्रिया व ज्ञान के बीच संतुलन बना लिया उसे जीवन में न केवल सुख बल्कि आनन्द की प्राप्ति होगी तथा तथा सुख व दुख से ऊपर उठ जायेगा -

"समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आत्मा एक विलसती,
आनंद अखण्ड घना था"

इस प्रकार जयशंकर प्रसाद का दर्शन पश्चिम एवं भारतीय दर्शन के मिश्रण से बना है किन्तु प्रसाद का मूल दर्शन प्रत्याभिज्ञा दर्शन है जहाँ इच्छा, क्रिया ज्ञान में संतुलन पाकर ही मनुष्य जीवन में आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

कामायनी, शून्यवाद, समरसवाद को उल्लेख कर दें। [illegible] 11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



(ख) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

शुक्ल जी ने सूर के काव्य को दो भागों में बाँटा है वक्रता, वाग्विदग्धता अर्थात बात में घुमा कर कहने की प्रवृत्ति को वाग्विदग्धता कहते हैं साथ ही व्यंग्य भी इसी के अन्तर्गत आता है।

सूर का काव्य वक्रता एवं वाग्विदग्धता का सुन्दर काव्य है जहाँ गोपियाँ अपने प्रेम के लिये उद्धव पर व्यंग्य करती हैं तथा मेहमान का पर्याप्त सम्मान भी बनाये रखती हैं।

"उधौ या लागौ चले आये
तुम देखो जिन माधव ऐसो, तुम तप ताप निवारो"

उद्धव पर व्यंग्य करती हुई गोपियाँ यहाँ ही नहीं रुकती तथा हर उस व्यावहारिक वस्तु पर व्यंग्य करती हैं जो उन्हें कृष्ण से दूर करती हैं।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसी क्रम में वे मथुरा पर व्यंग्य करती हुए कहती हैं कि वह काजर की कोठरी है जिसने हमारे कृष्ण को बंद कर लिया है।

"वह मथुरा काजर की कोठरी, जे आवहीं ते कारे"

गोपियों को पता चला है कि मथुरा में कोई कुब्जा नाम की स्त्री है जिसके चन्दन की महक मात्र पर कृष्ण उसपर मोहित हैं तब गोपियाँ कुब्जा पर भी नारीत्व व्यंग्य करती हैं।

"उधौ जागे माथे भाग
कुब्जा को पटरानी कीन्हौ, हमहीं देत वैराग"

जो प्रकृति मधुवन कृष्ण के संयोग समय शीतलता प्रदान करता था वही वियोग में जलन महसूस कर रहा है तथा गोपियाँ उस हरे-भरे मधुवन पर व्यंग्य करती हुए पूछ रही हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

तुम बिना कृष्ण के भी कैसे हरे-भरे हो तुम लाज नहीं आती।

"मधुबन तुम कत रहत हरे
विरह वियोग श्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे"

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सूरदास का काव्य वक्रता एवं वाग्विदग्धता पर अद्भुत रचना का काव्य है। शुक्ल ने भी कहा है उपालम्भ का ऐसा सुन्दर काव्य दूसरा नहीं है।

आन्दा

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) "'ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"ब्रह्मराक्षस" गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित लम्बी कविता है जिसमें फैंटेसी शिल्प का प्रयोग कर मुक्तिबोध ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्म संघर्ष को उभारा है। यह अपनी बिम्ब क्षमता के कारण में विख्यात रहा है।

मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस मे भयानक बिंबों का बेहतर प्रयोग किया है। मुक्तिबोध ने स्वयं कहा है मेरी यह रचनाएं भयानक बिम्ब है। कविता की शुरुआत बिंब से शुरू होती है।

"शहर के उस ओर
खण्डहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी"

शुरुआत में ही रोमांचकारी वर्णन एवं नाटकीय ढंग से वर्णन किया है कि ~~साक्ष~~ साक्षात बिंब

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation


बन जाता है।

फैंटेसी शिल्प के माध्यम से मुक्तिबोध ब्रह्मराक्षस के अन्तर्मन में पहुँच गये हैं तथा बेहतर बिम्ब क्षमता कौशल के कारण उस अन्तर्मन की बिम्बात्मक अभिव्यक्ति की है कि पाठक बिंब महसूस करते है।

"खूब ऊँचा जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ"

ब्रह्मराक्षस में आत्मचेतना तथा विश्वचेतना के बीच गहरा द्वंद्व व्याप्त है जिस कारण वह कठिन पड़ाव पर है तो खुद समस्या झेल रहा है जिसका वर्णन भी वर्णनात्मक (बिम्बात्मक) रूप में हुआ है।

"एक चढ़ना औ' उतरना
मोच पैरों में
और छाती पर अनेको घाव"

ब्रह्मराक्षस की अन्तर्द्वंद्व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के कारण इन दोनों विचारधारा आत्मचेतना विश्वचेतना में इस प्रकार मिल गया है कि इसकी शालती एवं नीच प्रकार से इर्द है। मुक्तिबोध ने इसे की बिम्बात्मक रूप में वर्णित किया है।

"मिल गया है
भीतरी और बाहरी दो पाटन के बीच
ऐसी ट्रेजिडी है नीच"

ब्रह्मराक्षस में मुक्तिबोध की बिम्बात्मक क्षमता के कारण यह कविता पठनीय देखी जा सकती है। इसकी बिंब क्षमता के कारण ब्रह्मराक्षस ने नाटकीय रूप धारण कर लिया है ऐसी क्षमता निराला, एवं मुक्तिबोध जैसे कुछ ही कवियों में है।

औसत
9/15



Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"असाध्य वीणा" अज्ञेय द्वारा रचित लम्बी कविता है जो जापानी मिथकीय आधार को लेके लिखी गई है। इसे सृजनशीलता जैसे गुणों के साथ ही व्यक्ति एवं समाज के बीच अन्तर्संबंध को को दिखाया गया है।

अज्ञेय समाज तथा व्यक्ति को अन्तर्संबंधित मानते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति समाज में स्वतंत्र है लेकिन समाज से नहीं" उनकी पंक्तियां हैं

"हम नदी के द्वीप हैं वह हमें आकार देती है।"

इसी प्रकार असाध्य वीणा में दिखाया गया है कि प्रियंवद वीणा को साध सका है क्योंकि वह जानता है कि संगीत उसकी व्यक्तिगत उपलब्धियाँ



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सम्पत्ति नहीं है वरन उसने संगीत को
समाज की सम्पत्ति माना है
"श्रेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में"
प्रियंवद से पहले कोई
भी वीणा को नहीं बजा पाया क्योंकि
जिन्होंने भी कोशिश की उनका मानना था
कि संगीत उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है।
जबकि प्रियंवद ने स्वयं को शून्य में
पहुँचाकर संगीत को समाज की सम्पत्ति
माना है जब वह कहता है-
"तू उतर वीणा के तारों पर
खुद को गा जा रे गा"
ऐसी आत्मविलियन
स्वं अहंकार शून्यता के कारण ही वीणा
में स्वर पड़ता है वीणा बज उठती है
"वीणा सहसा झनझना उठी"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वीणा से निकला स्वर सभी के लिये
भिन्न है कारण में वाद्योदर को रस माना
गया है रस आधार पर सबको अपने
अपने स्वधर्म के अनुसार संगीत सुनाई
दिया है तथा सभी के लिये इसकी
अनुभूति भिन्न थी
"उठ गयी सभा
सब अलग अलग एकाकी पार तिरे
युग पलट गया"
सभी ने संगीत की अनुभूति
भिन्न-2 की है
"राजा ने अलग सुना
रानी ने अलग सुना
प्रियंवद ने अलग सुना"
संगीत के बाद से
सभी को भिन्न भिन्न रूप से अनुभूति
प्राप्त हुई है तथा सभी ने हल्का
महसूस किया "राजा का मुकुट सहसा हलका हो गया"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार असाध्य वीणा एक किन्न अर्थ में व्यक्ति और समाज के संबंधों की कविता है जिसमें सभी व्यक्ति समाज से बंधे हैं तथा उससे अलग होकर उनका अस्तित्व नहीं है। साथ ही असाध्य वीणा पर टी.एस. इलियट के अस्तित्ववाद एवं कीर्केगार्द का प्रभाव भी परिलक्षित होती है।

अच्छा

11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।' विवेचन कीजिए। 15

ब्रह्मराक्षस फैंटेसी शिल्प पर आधारित मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता है जिसमें मुक्तिबोध ने केंद्रीय संवेदना के तौर पर "मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष" दिखाया है।

कविता में दिखाया है कि ब्रह्मराक्षस अपने कर्तव्य को पूरा न कर पाने के कारण ब्रह्मराक्षस का शिकार हुआ है। उसका कर्तव्य अर्थात सामाजिकता एवं समाज के लिए कुछ था वह अपना ज्ञान शिष्य को नहीं दे पाया है इसका संघर्ष है।

आधुनिक मध्यवर्ग भी ब्रह्मराक्षस की तरह समाज से कट गया है जिसमें समाज के लिए कुछ करने की ललक तो होती है किंतु वह निरर्थक बौद्धिक चिंतन में ही पड़ा रहता है कभी सक्रिय नहीं रहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बढ़ते शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण व्यक्ति अपनी गाँव, संस्कृति से कट गया है तथा इसी अपराध बोध से भरा है। शहर को ही यहाँ प्रतीक रूप में लिया गया है।

"शहर के इस ओर खण्डहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी"

मध्यवर्ग भी अपने इसी अपराध के कारण अन्तर्द्वंद्व में रहता है। यह अन्तर्द्वंद्व महाकोप के भेदवा का है स्वयं संवेदना का है तथा यही अन्तर्द्वंद्व अंधेरे में कविता में भी है।

शहरीकरण के कारण यह अन्तर्द्वंद्व बढ़ा है तथा निरंतर बौद्धिक चिंतन के कारण जिस प्रकार ब्रह्मराक्षस का दैहिक अंत हुआ है उसी प्रकार यह मध्यवर्ग भी इसी अपराध बोध में जीता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"पिस गया वह भीतरी और बाहरी दो पाटों के बीच ऐसी ट्रैजिडी है नीच"

अतः ब्रह्मराक्षस रचना मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष है तथा अपनी जिम्मेदारियों से तटस्थ हो चुके समाज के लिये मुक्तिबोध की यह बात बहुत जरूरी है जो उनके जिम्मेदारी की भावना को जगायेगा।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' निराला की ही 'शक्ति-पूजा' है। इस मत की सार्थकता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता राम ~~शक्ति~~ की शक्तिपुजा अनेक अर्थ धारण करती है। डा० निर्मला जैन ने इसे शक्ति की मौलिक कल्पना माना है तो इच्छाराम सिंह ने इसे स्वयं ~~क~~ निराला की आत्मकथा या शक्तिपुजा माना है।

निराला की पूर्ववर्ती रचना जिसे अधंकार नें लगाते हुई थी उसी अधंकार से शक्तिपुजा की शुरूआत हुई है

"दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज जो नहीं कही"

साथ ही जिस प्रकार शक्तिपुजा में शक्ति का नैतिक पक्ष में होना दिखाया है जहाँ शक्ति रावण के पास चली गई है

"उसी महाशक्ति या रावण ने आमंत्रण"

उसी प्रकार निराला के जीवन में यह शक्तिहीनता आर्थिक जीवन में है, उनकी कविताओं को पर्याप्त ~~स~~ सम्मान नहीं मिलता है।

अन्तिम समय में शक्तिपुजा में दिखाया गया आत्माधिक्कार का भाव जहाँ राम कहते हैं

"धिक्क जीवन को जो पाता ही सोध
धिक् जिसके लिये सदा ही किया शोध"

यही आत्माधिक्कार का भाव निराला का जीवन में आता है जब उनकी युवा पुत्री की मृत्यु हो जाती है जिसके बाद उन्होंने सरोज स्मृति की रचना की।

राम की शक्ति पुजा में राम का सीता के लिये जो अटूट प्रेम है वही प्रेम निराला जी का अपनी पत्नि के लिये है पत्नी

"जानकी हाय। उद्धार प्रिय का हो न सका"

मनोहरी देवी ~~व~~ का निराला के जीवन से साथ छोड़ना तथा उनके एक पत्नि व्रत पर अडिग रहना ही राम के


Copyright – Drishti The Vision Foundation


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समान परिस्थिति होता है
शक्ति पूजा में योग
साधना पद्धति भी दिखाई दी है जहाँ राम
कर्ते जाते हैं
"रूप से रूप हुए राघवेन्द्र के पंच दिवस"

निराला स्वयं भी योग
पद्धति से जुड़े होते थे तथा जिसका शारीरिक
वर्णन राम का किया गया है वही निराला
स्वयं का भी है अतः प्रतीकात्मक
अर्थ में यह स्वयं निराला की शक्तिपूजा
को दर्शाती है जिसमें संघर्ष से
लड़ना हुई निराशा से शक्तिपूजा में स्वयं
आये हैं तथा सफल हुये हैं

बहुत अच्छे

9½/15



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

## खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश रामविलास शर्मा
के निबंध ~~रामविलासशर्मा~~ 'तुलसी साहित्य
के सामंत विरोधी मूल्यों' से लिया गया है

प्रसंग - रामविलास शर्मा सामंतवाद की
स्थिति का वर्णन करते हुए दिखा
रहे कि किस प्रकार उस समय के हिसाब
से तुलसी का काव्य प्रगतिवादी है

व्याख्या - शर्मा जी तुलसी को सामंतविरोधी
कहने वालों पर तंज कसते हुए
कह रहे हैं कि पहले उस समय का
आकलन तो करो कि उस समय कोल
मनुष्यों का भी व्यापार होता था, काबुल
बाजार में तथा ब्रिटिश काल में भी कोल
लाखों हालातों की जाति किरात होती थी।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसके बाद ही हमें तुलसीदास की प्रगतिशीलता दिखेगी।

कलागत सौंदर्य - भाषा - खड़ीबोली
काव्यरूप - निबंध

विशेष

① मुगल कालीन, ब्रिटिशकालीन अन्यवाल्या कथा वालों के बेचने जैसी अमानवीय कृत को दिखाया गया है।

② तुलसीदास को प्रगतिवादी इनके काव्य को प्रगतिशील दिखाने का प्रयत्न करते हैं।

③ शुक्ल जी ने भी तुलसी के काव्य को प्रगतिशील माना है।

कौन है

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

प्रसंग - गुप्तसाम्राज्य के सेनापति धातुसेन द्वारा यह बात कही जा रही है कि गुप्त साम्राज्य की स्थिति डावाँडोल है

व्याख्या - हूणों के आक्रमण से सचेत होने की प्रेरणा देते हुए धातुसेन कह रहा है कि जिस प्रकार आँधी आने से पहले आकाश में बादल छा जाते हैं बिजली गिरने से पहले नील कादम्बिनी मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है। आज वही गुप्त साम्राज्य की है। इसलिये हूणों के आक्रमण के प्रति हमें सचेत एवं तैयार रहना चाहिए



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाषा → तत्सम खड़ीबोली

काव्यरूप - नाटक

**विशेष**

* गुप्तकालीन परिवेश को लेते हुए तत्कालीन समाज को प्रेरित करना चाहते थे यही नवजागरणवादी भावना गुप्त जी एवं भारतेन्दु में दिखता है
* भाषा, प्रवाहमयी एवं बोधगम्य है
* प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है [आँधी आने से पहले आकाश स्तब्ध होना]
* सूत्रशैली का भी प्रयोग हुआ है
* जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की झलक दिखती है



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नहीं, ये बातें गिने-चुने मूर्खों को छोड़कर, अब किसी को परेशान नहीं करतीं। परेशान करना तो दूर, क्षण-भर के लिए भी किसी के दिमाग में नहीं आतीं। कुछ बातें, कुछ तथ्य, कुछ स्थितियाँ प्रचलित होते-होते सबके बीच इस तरह स्वीकृति पा लेती हैं कि वे फिर लोगों की सोच की सीमा में रहती ही नहीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश 1979 ई० में रचित उपन्यास 'महाभोज' का है, जिसकी रचयिता मन्नू भण्डारी जी हैं।

**प्रसंग** - लेखिका समाज पर व्यंग्य करते हुए बता रही हैं कैसे ऐसे लोग संवेदनहीन हो जाते हैं।

**व्याख्या** - लेखिका ने राजनैतिक विद्रूपताओं के साथ ही सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट की है कि कुछ लोगों को छोड़कर अब किसी को ये बात परेशान नहीं करती है न ही किसी के दिमाग में आती है। ये बातें समाज में ऐसी हो गयी है मानो जैसे ये प्रचलित तथ्य हो, तथा फिर यह बातें किसी की सोच में रहती ही नहीं है।

प्रसंग बताएं



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यरूप → उपन्यास

भाषा → खड़ीबोली

विशेष

* महाजन में सामाजिक, राजनैतिक विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है।
* तटस्थता पर व्यंग्य कर रही है जैसा की व्यंग्य दिनकर जी ने कुरुक्षेत्र में किया है
"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध जो तटस्थ है समय लिखेगा उनके भी इतिहास"
* भाषा सरल, बोधगम्य एवं प्रवाहमयी है।
* सामाजिक यथार्थ को भी नग्नता से दिखाया गया है।

5/10

व्याख्या पर ध्यान दें



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद द्वारा 1936 में रचित महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से ~~ली गई है~~ लिया गया है।

प्रसंग – रायसाहब जमींदारी को जल्द ही समाप्त होने की बात कर रहे हैं।

व्याख्या – रायसाहब कह रहे हैं जल्द ही यह जमींदारी प्रथा समाप्त होने वाली है मैं उस दिन के लिये तैयार बैठा हूँ वह मेरे लिये उद्धार का दिन होगा, इन परिस्थि० ने हमारा सर्वनाश किया है हम इसी के शिकार बने हुए हैं यह संपत्ति का बेड़ा जब तक सर पर रहेगा, यह अभिशाप रूप में हमेशा ही रहेगा, हम उस मानवता का पद न पा सकेंगे जहां पहुँचना हर व्यक्ति



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है जीवन का लक्ष्य होता है।

भाषा - खड़ीबोली

विधा - उपन्यास

**विशेष**

① जमींदार वर्ग में उठ रहे असंतोष को दिखाया है

② भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है।

③ ढहते सामंतवाद एवं उभरते पूंजीवाद की झलक दिखती है

④ प्रेमचन्द ने जमींदार में व्याप्त शोषण को दिखाया है। लापरवाह स्वयं कह रहे है। यह व्यवस्था शोषणपरक है

⑤ सूत्रशैली का प्रयोग हुआ है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है, क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश महान नाटककार मोहन राकेश के प्रसिद्ध एवं कालजयी नाटक 'आषाढ़ के एक दिन' से लिया गया है।

**प्रसंग** - कालिदास अन्तिम पड़ाव में आगे मल्लिका से कह रहे हैं कि शायद तुम मुझे पहचानती नहीं हो।

**व्याख्या** - उज्जयिनी से लौटने के बाद कालिदास मल्लिका के घर जाता है मल्लिका उसे देखते रहती है तब वह कहता है शायद पहचानती नहीं हो ना पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह नहीं रहा जिसे तुम जानती थी, कोई और हूँ। और मुझे स्वयं नहीं पता कि मैं कौन हूँ मैं स्वयं को ही भूल गया हूँ तथा स्वयं को ही नहीं पहचानता हूँ।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा - खड़ीबोली
विधा - नाटक

विशेष

•) सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है

•) 1960 के बाद के शहरी मध्यवर्ग की स्थिति को बताता है अकेलापन आत्मनिर्वासन व्याप्त हुआ है

•) ऐसा ही अकेलापन मोहन राकेश की कहानी एक और जिंदगी में है

•) भाषा तत्समीयुक्त है फिर भी प्रवाहमयी एवं बोधगम्य है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या 'मैला आँचल' को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है? तार्किक उत्तर लिखिये। 20

"मैला आँचल" फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित आँचलिक उपन्यास है तथा यह हिन्दी का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है जो कि आंचलिक उपन्यास के लिये कसौटियाँ भी बनाता है तथा रेणु जी का 1957 में आया दूसरा आंचलिक उपन्यास परती परिकथा भी इसके सामने फीका है

मैला आँचल में मेरीगंज के प्रतीक गाँव के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का अंकन किया गया है, जिसमें रेणु जी ने प्रत्येक पक्ष को पूरी बारीकी से दिखाया है उन्होंने लिखा "इसमें फूल भी है, शूल भी है धूल भी है कांटे भी है गुलाब भी है, कीचड़ भी है सुन्दरता भी है कुरूपता भी है मैं किसी से भी अपना दामन बचा नहीं पाया"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मैला आँचल में दिखने वाली बातें पूरे भारत में नज़र आती हैं, जैसे- भारत जैसे उत्सवधर्मी समाज में बात-बात पर गीत गाना, कजरिया के गीत गाना, बारिश के लिये इन्द्र देवता को खुश करने हेतु जाट-जाटिन के खेल खेलना तथा संगीतात्मकता दिखती है। "डिम डिमिक डिमिक"

सामाजिक स्तर पर दिखाया गया जातिवाद हर गाँव में व्याप्त है, जहाँ एक जाति दूसरी से द्वेष करती है साथ ही जातियों में निम्न जातियों के साथ भेदभाव मूलक व्यवहार भी पूरे देश में ही दिखता है।

मैला आँचल में धार्मिक विद्रूपताओं को दिखाया गया है जैसे धर्म का साम्प्रदायीकरण, दूसरों की जिंदगी बरबाद कर सकता है जैसा आँचल में धर्म के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतिनिधि महंत जी हैं - विद्रूपताओं को दर्शाया है "महंत जब लक्ष्मी को मठ पर लाया था वह एक दम अबोध थी।"

गरीबी में महिलाओं की स्थिति कैसे दयनीय हो जाती है तथा उनपर खर्च करना भी गलत माना जाता है। "लड़की की जात बिना दवा दारू आराम हो जाती है।"

साथ रूढ़िवादिता के चलते से व्याप्त महिला के प्रति विद्वेष एवं नियंत्रण मूलक व्यवस्था जन्म लेती है "जोरू जमीन जोर की नहीं तो किसी और की"

पिछड़ेपन के कारण भारत के हर गाँव में स्वास्थ्य का निम्न स्तर रहता है तथा जिन लोगों के पास खाने के पाले नहीं होते वो भला कैसे इलाज करा सकते हैं ये दिखाया है- "जिस व्यक्ति के लिये भूख, एवं गरीबी हो उसके लिये यह किसी काम की नहीं"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रामीण समाज में व्याप्त स्थानीय बोलचाल शब्दावली का सुन्दर प्रयोग भी हुआ जिस कारण व्यक्ति (पाठक) आंचल में डूबी तरह रम जाता है। राजनीतिक स्तर पर व्याप्त जातिवाद एवं धर्म के अनुसार पार्टी को बांटना जैसी समस्या को भी दिखाया गया है।

इस प्रकार मैला आँचल में व्याप्त आंचलिकता पूरे भारतीय संस्कृति एवं ग्रामीण परिवेश में परिलक्षित होती है। इसलिये मैला आँचल निर्विवाद रूप से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। हालांकि अन्य आंचलिक उपन्यास नागार्जुन - बलचनमा, पानी का काला जलमें भी आंचलिकता का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)





Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

महाभोज 1979 में मनु भण्डारी द्वारा रचित राजनीतिक उपन्यास में है, जिसमें मनु भण्डारी जी ने तत्कालीन समय में व्याप्त राजनीतिक विद्रूपताओं को पूरी यथार्थ रूप से अंकन किया है।

उपन्यास कला की दृष्टि से अवलोकन करें, तो पहले स्तर पर उद्देश्य आता है। लेखिका किसी उद्देश्य को लेके नहीं चली है सिर्फ राजनीतिक यथार्थ का यथार्थ अंकन ही उद्देश्य है हालांकि अन्तिम पक्ष में लेखिका का उद्देश्य हावी हो जाता है किन्तु भी यह दुर्लभ यथार्थ श्रेणी का उपन्यास है।

चरित्र योजना की दृष्टि से बेहद सृजनशील उपन्यास है सभी चरित्र स्वाभाविक एवं स्वतंत्र हैं सभी को अपनी स्वाभाविकता का मौका दिया है साथ ही चरित्र न तो कम हैं न ज्यादा, दा साहब जैसे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)





Copyright – Drishti The Vision Foundation

चरित्र को पर्याप्त महत्व दिया गया है हीरो
गौण चरित्र को कम महत्व दिया है

भाषाशैली की दृष्टि से

रचनाशील उपन्यास है लेखिका ने सीधे सपाट शैली से यथार्थ की अभिव्यक्ति की है भाषा एकदम स्पष्ट एवं पात्रानुकूल है इसलिये दा साहब का अंग्रेजीपन एवं हीरा का कसैलीपन झलकता नहीं है

वातावरण स्तर पर

वातावरण सघन है किसी विशेष क्षेत्र का जिक्र किये बिना वातावरण रचा है, जिस कारण उपन्यास उत्तरी राज्य की तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था का यथार्थ अंकन कर पाया है

कथोपकथन दृष्टि से

गतिशील है सक्सेना - बिसू तुम्हारा दोस्त था न?
बिंदा - नहीं दुश्मन
सक्सेना - क्या दुश्मन



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कथानक स्तर पर महाभोज में पर्याप्त कसाव है कहीं भी ठहराव एवं तीव्रता कम नहीं होती है शुरू से अंत तक एक लय में बना रहता है, जो लेखिका कौशल एवं संयम का कमाल है

अतः महाभोज एक सफल उपन्यास है तथा उपन्यास की कला की दृष्टि से प्रत्येक स्तर पर लेखिका ने पर्याप्त लेखन कौशल का परिचय दिया है जिस कारण महाभोज आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाये हुये है



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' में समकालीन दलगत राजनीति का जन-विरोधी चरित्र विश्वसनीय तरीके से उभारा गया है- इस कथन का परीक्षण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज मन्नू भण्डारी द्वारा रचित उपन्यास है, जिसमें राजनैतिक विद्रूपता का यथार्थ अंकन हुआ है तथा तत्कालीन समय में व्याप्त दलगत राजनीति, जन विरोधी चरित्र को भी उभारा गया है।

जैसे-जैसे जनता अपरिपक्व एवं जागरूकता की कमी दिखायेगी तब तब दिखावे की राजनीति का प्रचलन बढ़ जायेगा जैसे दा साहब लोगों का दिल जितने के लिये हीरा को साथ बैठाते हैं।

"एकदम हक्का बक्का रह गया, उसे कहाँ नसीब हुआ गाड़ी में बैठना वो भी दा साहब की"

साथ ही दा साहब दलित लोगों के वोटों से चुनाव जीतते हैं ~~केवल~~ किंतु सुरक्षित जोरावर के हैं।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा जोरावर को बचाने के लिए बिंदा पर ही इलजाम लगवा देते हैं।

साथ ही लोचन कथा के माध्यम से दिखाया है कैसे मंत्रिमण्डल की खरीद फरोख्त चलती है। जब वो मंत्रिमण्डल गिराने की बात करते हैं, तभी राव एवं चौधरी दा साहब के पक्ष में चले जाते हैं।

~~[“क्या इसी सौदेबाजी की बात कर रहे थे क्या इसी इलेक्शन को ला ×]~~

“क्या इसी इलेक्शन की सौदेबाजी के लिये मंत्रिमंडल गिराने की बात कर रहे थे”

बिहारी भाई के माध्यम से सामान्य जनता के प्रति विद्वेष भाव दिखाया गया है।

“अजीब अहमक हैं ये स्साले देहाती भी”

सुकुल बाबू जो कि दलितों की वजह से आज तक की सबसे बड़ी ~~सभा~~ रैली कर पाये हैं किन्तु आततायि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्तर पर उनके प्रति विद्वेष से भरे हैं
जैसे - "अब बचे हुए सारे वोट अपनी ओर करने पड़ेंगे तब बात बनेगी लेकिन इन नीच जात वालों का भरोसा तो नहीं?"

इस प्रकार मन्नू भण्डारी ने राजनीति में व्याप्त छलावा, दोगलापन, जन विरोधी चरित्र एवं स्वार्थ का यथार्थ अंकन किया गया है, जिस कारण दशकों बाद भी महाभोज आज भी ~~के लिये~~ प्रासंगिक ~~हो~~ पड़ा है।

कौन है? 8/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) कथा के धरातल पर ऐतिहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त क्यों एक आधुनिक नाटक है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)




Copyright – Drishti The Vision Foundation


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'श्रुति मार्ग के नहीं', 'मुनि मार्ग के अनुयायी हैं।' उनके निबंधों के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)




Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का उद्घाटन करते हुए बताइये कि क्या यह यशपाल के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करता है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक में तत्कालीन समाज का जो प्रतिबिंबन हुआ है, वह आज कहाँ तक प्रासंगिक है? युक्तियुक्त विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

# रफ कार्य के लिये स्थान

# (Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

# रफ कार्य के लिये स्थान

# (Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation